मनोज
कॉमिक्स
संख्या 706 मूल्य 7.00
ड्रैक्यूला की वापसी
राम-रहीम

ड्रैकुला की वापसी

ड्राकयूला की वापसी

▪ लेखक : संदीप सावन ▪ चित्रांकन : कदम स्टूडियो | डबल सीक्रेट एजेंट 00½ राम-रहीम सीरीज

..ओह! कहीं जग्गा ने उस पर हमला तो नहीं कर दिया है? जरूर यही बात होगी।
बचाओऽऽऽ

उधर —
नहीं नहीं, छोड़ दो मुझे। छोड़ दो।
ही...ही...ही। अगर मैंने तुझे छोड़ दिया तो मेरी बरसों की खून की प्यास कैसे बुझेगी? ही..ही...ही।

नहीं ऽऽऽ!
आहा! खून... खून!

ई...ई..ई...!
सुप... सुप..

चप... चप.. चप..

तभी आंधी-तूफान की तरह इंस्पेक्टर वहां पहुंचा।
राम सिंह की आवाज इधर से ही आई थी।

फिर उस कमरे में घुसते ही—
हे भगवान! यह जग्गा तो हर्गिज नहीं हो सकता। यह तो कोई पिशाच मालूम पड़ता है, मगर जग्गा अचानक पिशाच कैसे बन गया?
फ्चर... फ्चर...

धांय
धांय
धांय
हा...हा...हा! एक शिकार और...हा...हा...हा...!

ओ माई गॉड! इस पर तो गोलियों का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा है। आखिर यह...!
धांय

हा...हा...हा! मैं जग्गा नहीं बल्कि डाकुला बालक हूं इंस्पेक्टर। अब तुम्हारे मुजरिम जग्गा के शरीर पर मेरा कब्जा है। अब तुम्हारा भी खून पीकर वर्षों बाद मेरी खून पीने की प्यास अच्छी तरह बुझेगी।
है! डाकुला बालक!

अगले ही पल इंस्पेक्टर पलटकर भाग खड़ा हुआ।
उफ! अब तो यहां से भाग निकलने में ही भलाई है।

तभी पिशाच बना जग्गा इंस्पेक्टर पर झपटा।
हा...हा...हा! मेरा शिकार मुझसे बच नहीं सकता। हा...हा...हा!

इंस्पेक्टर, पिशाच बने जग्गा से बच नहीं पाया और—
धड़ाक
आह!

हा...हा...हा...! अब प्यास के साथ-साथ मेरी भूख भी मिट जाएगी।

फिर वह इंस्पेक्टर के
चपर...चपर...

कुछ देर बाद —
हा... हा... हा। आज बहुत दिनों बाद मुझे इस भूतमहल से मुक्ति मिली है।

चलते-चलते एकाएक उसकी आँखों से चिंगारियाँ-सी फूटने लगीं।
अब जब तक शहर जाकर मैं अपने दुश्मन राम-रहीम का खून नहीं पी लूँगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।

मत चलो, पर तुम माने ही नहीं। अब

अब चुप भी रहो यार! कॉलेज के ढेर सारे स्टूडेंट पिकनिक पर आते थे, अगर हम भी आ गए तो कौन सा तूफान मच गया! अब तुम ही बताओ, अगर बस का पहिया दो बार पंक्चर नहीं हो जाता तो क्या हम समय पर घर नहीं पहुँच जाते?
मुझे तो लगता है, यह खटारा बस आज रात हमारी खाट खड़ी और बिस्तर गोल करके छोड़ेगी।

तभी बस एक झटके के साथ रुकी और...
हाय रे! टूट गये दांत!
उफ!

अब क्या हुआ ड्राइवर? बस क्यों रोक दी?

रेडियेटर गर्म हो गया है, पानी डालना होगा।
पानी डालना होगा? लेकिन भाई, इस जंगल में पानी कहां मिलेगा?
पानी का इंतजाम तो करना ही होगा, वरना सबको सारी रात यहीं काटनी पड़ेगी।

राम भइया! अब तुम ही कुछ करो, वरना हम सबको आज की रात यहीं घुट-घुटकर मरना होगा।

ठीक है! आओ रहीम, कहीं से पानी का इंतजाम करके लाते हैं।

लेकिन राम भइया, इस सुनसान जंगल में पानी कहां मिलेगा?

यहां पास ही कुछ
क्या? भूतमहल
क्या, क्या हुआ?
प्रोफेसर दिवाकर

अरे राम भइया, वो देखो

अरे जीप और मोटरसाइकिल

दोनों लपककर उस स्थान पर पहुंचे

यहां लावारिस कैसे खड़ी है?

और देखो, इस मोटरसाइकिल का टायर बर्स्ट है

है यह महल। बिल्कुल पहले जैसा भुतिया

बचाओ
भागो

धड़ाक
आह!

हा हा हा!
आह!

नहीं नहीं
मुझे छोड़ दो
हा हा हा!

हा हा हा!

या अल्लाह,
यह तो कोई इंसान नहीं, पिशाच लगता है।

!!!

हा... हा... हा... आओ, आओ, मुझे भी तुम दोनों से अपना पुराना हिसाब चुकाना है।

और
आह!

धड़ाम
उफ़!

उफ़!
ओह!

रहीम! सावधान रहना!

आह!

हा हा हा!

देर बाद शहर पहुंच जायेगा
67 द्वारा शहर में प्रवेश
करने वाला है

फिर राम से संबंध विच्छेद करने के पश्चात चीफ मुखर्जी ने किसी अधिकारी से फोन पर संपर्क किया और कुछ आवश्यक हिदायतें देने लगे
बस... बस... शहर की जंगल वाली सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दो। बस नम्बर डी बी पी 67 के ड्राइवर को देखते ही गोली मार दो

और सुनो, शहर में सभी लोगों को सूचित कर दो कि एक शैतान शहर में घुसने वाला है, कोई घर से बाहर न निकले।
ओ के सर

कुछ ही देर में
शहर में एक भयानक शैतान जो कि ड्रैक्युला बालक है, प्रवेश करने जा रहा है, अतः आप सबसे निवेदन है कि आप अपने घरों से बाहर न निकलें
?
!!

...और अपने घरों के खिड़की दरवाजे अच्छी तरह बंद कर लें। धन्यवाद।
!!

ड्रैक्युला बालक के पुनः जीवित होने की खबर सुनकर पूरे शहर में हड़कंप मच गया
भागो भागो, ड्रैक्युला बालक आ रहा है

हे भगवान यह क्या हुआ? ड्रैक्युला बालक की आत्मा किसी इन्सान के शरीर में प्रविष्ट हो गई। अब क्या होगा?

आह!
उफ

नहीं. ई. ई.
हा हा हा
आह!
ई. ई. ई.

आह!
हाय!
आ. ह!

चारों तरफ मरघट का सा सन्नाटा छाते ही वह बस से नीचे उतरा।
हा हा हा
खून. मांस चारों तरफ
खून ही खून मांस ही मांस
कितना मजा आयेगा अब
भूख और प्यास
मिटेगी

और फिर वह वहां चारों तरफ फैले खून से अपनी प्यास बुझाने लगा
चप,
चप.

की ओर चल दिया

उफ, यहां का दृश्य देखने से ही पता लगता है कि इस दरिंदे ने ये सब हत्याएं कितनी नृशंसता से की होंगी।

पर कैसे?

कुछ देर बाद राम
यस चीफ, ड्राक्युला को समाप्त करने के लिए हमें प्रोफेसर दिवाकर को खोजना ही होगा।
लेकिन ये प्रोफेसर दिवाकर हैं कौन? क्या किसी अन्य वैज्ञानिक से काम नहीं चल सकता?
यस सर। ड्राक्युला बालक को डॉक्टर शैतान ने तैयार किया था, और डॉक्टर शैतान को सारी वैज्ञानिक विद्या प्रोफेसर दिवाकर ने ही सिखाई थी। इसलिए सिर्फ वही जानते होंगे कि ड्राक्युला बालक को कैसे समाप्त किया जा सकता है?
ओह, लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आया कि आज जब डॉक्टर शैतान जीवित नहीं है, तो फिर इस ड्राक्युला को किसने और कैसे जीवित कर दिया?
चीफ! बस यही एक ऐसा रहस्य है, जो अभी तक हमारी भी समझ में नहीं आया है।
परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि प्रोफेसर दिवाकर के मिलने के बाद हम सारा रहस्य समझ सकते हैं।
ठीक है! मैं अभी प्रोफेसर दिवाकर की खोज शुरू करवाता हूँ

जैसे ही मुझे कुछ पता चलेगा, मैं तुम्हें सूचित करूंगा। वैसे मैंने तीनों घटना स्थलों पर पुलिस फोर्स को रवाना करवा दिया है
यह आपने अच्छा किया चीफ। अब हम चलते हैं आजकल मम्मी-डैडी शहर से बाहर गये हुए हैं, इसलिए हम यहां से सीधे ड्राक्युला बालक की खोज में ही निकलेंगे
की खोज में शहर का चक्कर लगाते रहे
और अन्त में हताश हो अपने कक्ष में आकर सो गये।
सुबह
ट्रिन. ट्रिन.
ओह! शायद चीफ का फोन है

हैलो। राम स्पीकिंग
राम, मैं चीफ बोल रहा हूँ।

ओह, गुड मार्निंग चीफ। कहिए, कैसे याद किया ?

प्रोफेसर दिवाकर के बारे में कुछ जानकारी मिली है सुनो

सब कुछ सुनने के बाद —
ओ. के. चीफ। मुझे उम्मीद है कि अब हम डाक्यूला को खत्म कर सकते हैं

राम फोन रखकर जैसे ही पलटा —
किसका फोन था राम भइया ?
दिल्ली जाना है, मगर क्यों ?
चीफ अंकल का, अब जल्दी से तैयार हो जाओ हमें नौ बजे की ट्रेन से दिल्ली के लिए रवाना होना है।

प्रोफेसर दिवाकर का पता मिल गया है, वे दिल्ली में हैं।
सच ?

हां, प्रोफेसर दिवाकर इस समय अपने एक शिष्य के महरौली स्थित फार्म हाउस पर ठहरे हुए हैं।

ओह! समझा! मैं अभी तैयार होता हूं

तुम दिल्ली कभी नहीं पहुंच पाओगे।
क... कौन?

ओह ड्राक्युला!

हा, हा...हा! तुम दोनों क्या समझते थे, मैं तुम्हारा खून पिये बिना ही आसानी से तुम्हारा पीछा छोड़ दूंगा?

त... तुम यहां कैसे पहुंच गये?

ड्राक्युला ने झपटकर रहीम की गर्दन थाम ली।
हा... हा... हा! आत्मा को कहीं भी आने-जाने से कोई नहीं रोक सकता। अब तुम दिल्ली नहीं यमपुरी जाओगे।
आह...

...राम! बचाओ!
उफ! अगर मैंने जल्द ही कुछ नहीं किया, तो यह रहीम को मार डालेगा!

फिलहाल इस कुर्सी से काम चलाऊं।

अगले ही पल—
धड़ाक
आह!

और इससे पहले कि ड्राक्युला संभल पाता—
आह!
धड़ाक

धम्म
उफ!

रवीश! भागो!

फिर दोनों ने खिड़की से बाहर छलांग लगा दी।
छनाक
छनाक

सीधे रेलवे स्टेशन की तरफ भागो। ट्रेन छूटने में अब कुछ मिनट ही शेष रह गये हैं।

अगर ये दोनों प्रोफेसर दिवाकर के पास पहुंचने में सफल हो गये तो फिर मुझे इस शरीर के साथ नष्ट होने से कोई नहीं बचा पायेगा और मेरा बदला अधूरा रह जाएगा।

तुम ठीक कहते हो रहीम, लेकिन फिलहाल तो उससे हमारा पीछा छूट ही गया है।

- क्या राजधानी एक्सप्रेस दिल्ली पहुंच सकी?
- क्या राम-रहीम ड्राक्युला के खूनी पंजे से बच सके?
- आदिवासियों के उस गिरोह का क्या हुआ, जो ड्राक्युला का अपहरण करना चाहता था?
- क्या राम-रहीम प्रोफेसर दिवाकर से मिल सके?
- आखिर ड्राक्युला की वापसी कैसे हुई थी?
- क्या राम-रहीम ड्राक्युला को समाप्त कर सके?
- ऐसे व अन्य ढेर सारे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए 'मनोज कॉमिक्स' में इस रोमांचकारी कथा का अगला भाग पढ़ें — 'ड्राक्युला दिल्ली में।'

ड्राक्युला दिल्ली में